[भारत सरकार के राजपत्र भाग III—खण्ड 4 में 31 मई 1986 को मुद्रित]

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्

नई दिल्ली, दिनांक 15 मई 1986

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् (भारतीय चिकित्सा में शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम, 1986।

सं० 8-3/86 रीगल—

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (1970 का 48) की धारा 36 के उपबन्ध (ज्ञ) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा उक्त उपबन्ध (ज्ञ) के अधीन विनिर्मित समस्त पूर्व विनियमों के प्रतिस्थापन में, इस प्रकार के प्रतिस्थापन से पूर्व किए गए अथवा किए जाने हेतु छोड़े गए किसी कार्य के अतिरिक्त, भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद केन्द्र सरकार की पूर्व स्वीकृति से निम्न विनियमों का निर्माण करती है, यथा :—

1. संक्षिप्त शीर्षक :—इन विनियमों को भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् (भारतीय चिकित्सा में शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम 1986 कहा जाय।

2. प्रारम्भ:— ये तत्काल प्रभावी होंगे।

3. परिभाषाएं :— (क) जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो :—

(क) "अधिनियम" से भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (1970 का 48) अभिप्रेत है।

(ख) "केन्द्रीय परिषद्" से अधिनियम की धारा 3 के अधीन गठित भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् अभिप्रेत है।

(ग) मान्य संस्था से अधिनियम की धारा-2 की उपधारा-(1) के उपबंध (क) के अधीन यथापरिभाषित अनुमोदित संस्था अभिप्रेत है।

(घ) "अनुसूची" से इन विनियमों से संलग्न अनुसूची अभिप्रेत है।

(2) इन विनियमों में प्रयुक्त किन्तु अपरिभाषित शब्दों एवं अभिव्यक्तियों का वही अर्थ होगा जो अधिनियम में क्रमशः उनका दिया गया है।

4. भारतीय चिकित्सा की शिक्षा के न्यूनतम मानक :—

आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी तिब के लिए भारत में विश्वविद्यालयों, बोर्डों या चिकित्सीय संस्थाओं के द्वारा मान्य चिकित्सीय अर्हताएं प्रदान करने के लिए अपेक्षित भारतीय चिकित्सा की शिक्षा के न्यूनतम मानक अनुसूची 1, अनुसूची 2 एवं अनुसूची 3 में यथा विनिर्दिष्ट होंगे।

5. आयुर्वेदाचार्य पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक—आयुर्वेदाचार्य के पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक अनुसूची 1 में यथा विनिर्दिष्ट होंगे।

6. सिद्ध मरुथवा अरिग्नर पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक:—सिद्ध मरुथुवा अरिग्नर के पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक अनुसूची-2 में यथा विनिर्दिष्ट होंगे।

7. कामिल-ए-तिब्ब-ओ-जराहत के पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक:—कामिल-ए-तिब्ब-ओ-जराहत के पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक अनुसूची-3 में यथा विनिर्दिष्ट होंगे।

राजकुमार जैन
निबंधक
भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्

अनुसूची—1

(विनियम 5 देखें)

आयुर्वेदाचार्य पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक

1. उद्देश्य एवं प्रयोजन

"आयुर्वेदीय शिक्षा का उद्देश्य आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों के अनुरूप वैज्ञानिक ज्ञान सहित आयुर्वेद के गहन आधार वाले प्रकांड पांडित्य युक्त स्नातक पैदा करना होना चाहिए जो योग्य एवं दक्ष अध्यापक, अनुसंधानकर्ता, कार्यचिकित्सक एवं शल्यचिकित्सक होंगे जो देश की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं म कार्य करने में पूर्णतः सक्षम हों।

2. प्रवेश अर्हता

(1) विज्ञान (भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान) तथा संस्कृत सहित इन्टरमीडिएट/12वीं कक्षा।

जहां इन्टरमीडिएट/12वीं कक्षा (जीव विज्ञान-विज्ञान वर्ग) में वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत की शिक्षा का प्रावधान और सुविधाएं उपलब्ध नहीं है वहां इन्टरमीडिएट/12वीं कक्षा (जीव विज्ञान-विज्ञान वर्ग) के छात्रों को प्रवेश दिया जाये और संस्कृत को मुख्य पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाये।

अथवा

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की विज्ञान एवं अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा।

अथवा

राज्य सरकारों/परीक्षा से संबंधित राज्य शिक्षा मंडलों द्वारा मान्य कोई अन्य समकक्ष अर्हता।

(2) तथापि, उत्तर मध्यमा या हायर सकण्डरी/पी० यू० सी० प्रमुखतः संस्कृत सहित या उसके समकक्ष कोई अन्य परीक्षा के विषय में एकवर्ष की अवधि का प्रागायुर्वेद पाठ्यक्रम तथा पूर्वमध्यमा या एस० एस० एल० सी०/मैट्रिक प्रमुखतः संस्कृहित सहित या उसके समकक्ष परीक्षा के सम्बन्ध में दो वर्ष की अवधि का प्रागायुर्वेद पाठ्यक्रम भी आगे पांच वर्ष की अवधि के लिए जारी रहेगा।

3. प्रवेश के लिए न्यूनतम वर्ष

(अ) प्रागायुर्वेद पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए प्रवेश वर्ष में प्रथम अक्तूबर को 15 वर्ष।

(ब) प्रागायुर्वेद पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष में प्रवेश हेतु प्रवेश वर्ष में प्रथम अक्तूबर को 16 वर्ष।

(स) मुख्य आयुर्वेद पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु प्रवेश वर्ष में प्रथम अक्तूबर को 17 वर्ष।

4. पाठ्यक्रम की अवधि

(क) प्रागायुर्वेद पाठ्यक्रम . . .	2/1 वर्ष
(ख) मुख्य पाठ्यक्रम . . .	5 वर्ष
(ग) विशिखानुप्रवेश . . .	6 मास

5. पाठ्यक्रम की सफलतापूर्वक पूर्णता के पश्चात् प्रदान की जाने वाली उपाधि—आयुर्वेदाचार्य (बचलर आफ आयुर्वेदिक मेडीसिन एण्ड सर्जरी)

6. शिक्षा का माध्यम

संस्कृत, हिन्दी अथवा कोई मान्य क्षेत्रीय भाषा।

7. आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रविष्ट किए जाने हेतु छात्रों की न्यूनतम संख्या—वर्तमान समय में एक आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रविष्ट लिए जाने हेतु छात्रों की न्यूनतम संख्या 20 होनी चाहिए।

शिक्षण एवं परीक्षा के विषय		
परीक्षा के विषय	शिक्षण के विषय	
	प्रागयुर्वेद पाठ्यक्रम	
संस्कृत	1. संस्कृत	
प्रारम्भिक पदार्थ विज्ञान	2. प्रारम्भिक पदार्थ विज्ञान	
उद्भिज्जांग प्रत्यंग विज्ञान	3. उद्भिज्जांग प्रत्यंग विज्ञान	
प्रारम्भिक रसशास्त्र परिचय	4. प्रारम्भिक रसशास्त्र परिचय	
आयुर्वेद इतिहास एवं आयुर्वेद परिचय	5. आयुर्वेद इतिहास एवं आयुर्वेद परिचय	
	मुख्य आयुर्वेद पाठ्यक्रम	
प्रथम वर्ष		
1. पदार्थ विज्ञान	1. पदार्थ विज्ञान	
2. अष्टांग संग्रह	2. अष्टांग ... (सूत्रस्थानम्)	
	3. शरीर रचना विज्ञान	
	4. शरीर क्रिया विज्ञान	
	5. स्वस्थवृत्त	
द्वितीय वर्ष		
1. शरीर रचना विज्ञान	1. शरीर रचना विज्ञान	
2. शरीर क्रिया विज्ञान	2. शरीर क्रिया विज्ञान	
3. स्वस्थवृत्त (योग एवं निसर्गोपचार के सम्बद्ध अंशो सहिता)	3. स्वस्थवृत्त (योग एवं निसर्गोपचार के समबद्ध अंशो सहिता)	
	4. द्रव्यगुणविज्ञान	
	5. रसशास्त्र	
	6. भैषज्य कल्पना	
	7. रोग विज्ञान एवं विकृति विज्ञान	
तृतीय वर्ष		
1. द्रव्यगुण विज्ञान		1. द्रव्यगुण विज्ञान
2. रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना		2. रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना
3. रोगविज्ञान एवं विकृति विज्ञान		3. रोगविज्ञान एवं विकृति विज्ञान
4. अगदतंत्र एवं व्यवहारायुर्वेद		4. अगदतंत्र एवं व्यवहारायुर्वेद
		5. प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग
चतुर्थ वर्ष		
1. चरक संहिता (पूर्वार्ध)		1. चरक संहिता (पूर्वार्ध)
2. प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग		2. प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग
3. कौमार भृत्य		3. कौमार भृत्य
		4. कार्य चिकित्सा
		5. शल्यतंत्र
		6. शालाक्य तंत्र
पंचम वर्ष		
1. चरक सहिता (उत्तरार्ध)		1. चरक संहिता (उत्तरार्ध)
2. काय चिकित्सा		2. कार्य चिकित्सा
3. शल्यतंत्र		3. शल्यतंत्र
4. शालाक्यतंत्र		4. शालाक्यतंत्र

9. परीक्षा योजना

प्रत्येक विषय की परीक्षा वर्ष में दो बार नवम्बर और अप्रैल माह में होनी चाहिए। प्रश्न सरल संस्कृत में होंगे परन्तु उनके उत्तर संस्कृत या हिन्दी अथवा किसी मान्य क्षेत्रीय भाषा, जो शिक्षण का माध्यम हो, में दिए जा सकते हैं।

10. प्रश्न पत्रों की संख्या एवं प्रत्येक के अंक

विषय	सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों की संख्या	अंक	प्रायोगिक/ मौखिक	कुल अंक
1	2	3	4	5
	प्रागायुर्वेद के विषय			
1. संस्कृत	प्रथम प्रश्न पत्र	100	50	350
	द्वितीय प्रश्न पत्र	100		
	तृतीय प्रश्न पत्र	100		
2. प्रारम्भिक पदार्थ विज्ञान	प्रथम प्रश्न पत्र	100	50	250
	द्वितीय प्रश्न पत्र	100		
3. उद्भिज्जांग प्रत्यंग विज्ञान	एक प्रश्न पत्र	100	50	150
4. प्रारम्भिक रसशास्त्र परिचय	एक प्रश्न पत्र	100	50	150
5. आयुर्वेद इतिहास एवं आयुर्वेद परिचय	एक प्रश्न पत्र	100	—	100
	मुख्य आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विषय			
1. पदार्थ विज्ञान	एक प्रश्न पत्र	100	50	150
2. अष्टांग संग्रह	एक प्रश्न पत्र	100	—	100
3. शरीर रचना विज्ञान	प्रथम प्रश्न पत्र	100	200	400
	द्वितीय प्रश्न पत्र	100		
4. शरीर क्रिया विज्ञान	प्रथम प्रश्न पत्र	100	200	400
5. स्वस्थवृत	द्वितीय प्रश्न पत्र	100		
(क) सामाजिक एवं रोगानुत्पादक – 50	प्रथम प्रश्न पत्र			
(ख) वैयक्तिक – 50		100		
(ग) योग और नितर्गोपचार – 50	द्वितीय प्रश्न पत्र	100	50	250
(घ) आहार विधि/पोषण				
6. द्रव्यगुण विज्ञान	प्रथम प्रश्न पत्र	100	150	350
	द्वितीय प्रश्न पत्र	100		

1	2	3	4	5
7. रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना	प्रथम प्रश्न पत्र द्वितीय प्रश्न पत्र	100 100	150	350
8. रोगविज्ञान एवं विकृति विज्ञान	प्रथम प्रश्न पत्र द्वितीय प्रश्न पत्र	100 100	100	300
9. चरक संहिता (पूर्वार्ध)	एक प्रश्न पत्र	100	—	100
10. प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग	प्रथम प्रश्न पत्र द्वितीय प्रश्न पत्र	100 100	100	300
11. कौमारभृत्य	एक प्रश्न पत्र	100	50	150
12. अगदतंत्र एवं व्यवहारायुर्वेद	एक प्रश्न पत्र	100	50	150
13. चरक संहिता (उत्तरार्ध)	एक प्रश्न पत्र	100	—	100
14. कायं चिकित्सा				
(क) चिकित्सा सिद्धांत —50 (ख) सिद्ध चिकित्सा —25 (ग) यूनानी चिकित्सा —25	प्रथम प्रश्न पत्र	100		
ज्वरादि रोग चिकित्सा				
(क) वातव्याधि चिकित्सा —50 (ख) मानसरोग भूतविद्या एवं योग चिकित्सा —30	द्वितीय प्रश्न पत्र तृतीय प्रश्न पत्र	100 100	200	600
(ग) आत्ययिक चिकित्सा —20				
(क) पंचकर्म —50 (ख) रसायन —25 (ग) वाजीकरण —25	चतुर्थ प्रश्न पत्र	100		
15. शल्यतंत्र	प्रथम प्रश्न पत्र द्वितीय प्रश्न पत्र	100 100	100	300
16 शालाक्य	प्रथम प्रश्न पत्र द्वितीय प्रश्न पत्र	100 100	100	300

11. उत्तीर्णतांक :

प्रत्येक विषय में प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों के लिए पृथक-पृथक रूप से 50 प्रतिशत अंक उत्तीर्णांक होंगे। किसी भी विषय में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक उस विषय में विशेष योग्यता सूचक होंगे।

12. वर्षानुक्रम से विभिन्न विषयों के व्याख्यानों, प्रायोगिकों एवं निर्देशनों की संख्या

प्रागायुर्वेद पाठ्यक्रम

विषय	द्विवर्षीय पाठ्यक्रम		एक वर्षीय पाठ्यक्रम	
	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक
1. संस्कृत	450	—	300	—
2. प्रारम्भिक पदार्थविज्ञान	300	100	200	50
3. उद्भिज्जांग प्रत्यंग विज्ञान	200	100	100	50
4. प्रारम्भिक रसशास्त्र परिचय	200	100	100	50
5. आयुर्वेद इतिहास एवं आयुर्वेद परिचय	150	—	100	—

मुख्य आयुर्वेद पाठ्यक्रम

विषय	व्याख्यान	प्रायोगिक	निदर्शन
1	2	3	4
प्रथम वर्ष			
1. पदार्थ विज्ञान	125	—	—
2. अष्टांग संग्रह	100	—	—
3. शरीर रचना विज्ञान	100	75	—
4. शरीर क्रिया विज्ञान	75	20	20
5. स्वस्थवृत्त	50	—	—
द्वितीय वर्ष			
1. शरीर रचना विज्ञान	100	75	—
2. शरीर क्रिया विज्ञान	75	20	20
3. स्वस्थवृत्त	50	50	—
4. द्रव्यगुण विज्ञान	100	20	10
5. रसशास्त्र	65	50	10
6. भैषज्य कल्पना	65	50	10
7. रोग विज्ञान एव विकृति विज्ञान	100	50	—
तृतीय वर्ष			
1. द्रव्यगुणविज्ञान	100	40	30
2. रसशास्त्र	65	55	10

1	2	3	4
भैषज्यकल्पना . .	65	55	10
रोग विज्ञान एवं विकृति विज्ञान .	150	100	—
अगदतन्त्र एवं व्यवहारायुर्वेद . .	100	50	—
प्रसूति तंत्र एवं स्त्रीरोग . .	100	50	—
पंचवर्ष			
चरक संहिता . .	100	—	—
प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग . .	100	50	—
कौमार भृत्य . .	100	50	—
. कार्य चिकित्सा . .	100	50	—
. शल्य तंत्र . .	50	25	—
. शालाक्य तंत्र . .	50	25	—
छम वर्ष			
कार्य चिकित्सा . .	200	100	—
2. शल्यतंत्र . .	100	75	—
3. शालाक्य तंत्र . .	100	75	—
4. चरक संहिता . .	100	—	—

सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक का पीरियड 45 मिनट की अवधि से कम नहीं होगा। चिकित्सीय विषयों एवं रचना शरीर (शवच्छेदन) की प्रायोगिक अवधि कम से कम डेढ़ (1/1/2) घटा होगी।

टिप्पणी :—तृतीय, चतुर्थ एव पंचम वर्ष में छात्रों का अस्पताल में चिकित्सीय प्रशिक्षण निम्न प्रकार होगा :—

(क) कार्य चिकित्सा	(अन्तरंग एवं बाह्य कक्ष)	10 मास
(ख) शल्यतंत्र	(अन्तरंग एवं बाह्य कक्ष)	8 मास
(ग) शालाक्यतंत्र	(अन्तरंग एवं बाह्य कक्ष)	3 मास
(घ) प्रसूति तंत्र	(अन्तरंग एवं बाह्य कक्ष)	3 मास
(ङ) कौमार भृत्य		1 मास
(च) पंचकर्म		1 मास
(छ) मानसिक रोग		1 मास
(ज) संकामक रोग	(क्षय एवं कुष्ठ रोग सहित)	1 मास

13. शिक्षण कर्मचारियों के लिए विहित अर्हताएं अनिवार्य

(क) विधि द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय अथवा भारतीय चिकित्सा के सांविधिक मंडल/संकाय/परीक्षा निकाय से आयुर्वेद की उपाधि/अधिकार पत्र या उसके समकक्ष।

अथवा

निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य।

अथवा

स्थापित प्रतिष्ठा के श्रेष्ठ अन्य आयुर्वेदीय विद्वान, भले ही उनके पास कोई उपाधि/अधिकार पत्र न हो किन्तु वे आयुर्वेद के विषयों के अध्यापन के योग्य हों।

(ख) प्राध्यापक, प्रवाचक एवं व्याख्याता के पद के लिए किसी संस्था में क्रमशः दस वर्ष, पांच वर्ष एवं तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव।

(ग) संस्कृत का ज्ञान

वांछनीय

(क) किसी मान्य संस्था/विधि द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय से आयुर्वेद में स्नातकोत्तर अर्हता।

(ख) अपने विषय पर मूल प्रकाशित पत्र/पुस्तकें।

अनुसूची—II

(विनियम 6 देखें)

सिद्ध मरुथुवा अरिग्नर पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम मानक

सिद्ध शिक्षा का उद्देश्य एवं प्रयोजन

1. शिक्षा के न्यूनतम मानकों से संबंधित सिद्ध समिति द्वारा अनुशंसित सिद्ध योजना में शिक्षा का उद्देश्य एवं प्रयोजन विवेकी एवं दक्ष चिकित्साभ्यासी उपलब्ध करानी है जो पद्धति के सिद्धातों एवं चिकित्सा के आधार पर चिकित्सीय सहायता प्रदान करेंगे। चिकित्साभ्यासियों को आपातकालीन उपचार प्रदान करने की स्थिति में भी होना चाहिए।

2. ऐसे सक्षम व उपयुक्त कार्मिक उपलब्ध कराना जो सिद्ध चिकित्सा के महाविद्यालय में शिक्षण एवं अनुसंधान कार्य कर सकें।

3. नोई इल्लानरी एवं इथिराथुकथल के अच्छे ज्ञान सहित ऐसे बुनियादी चिकित्सक पैदा करना ताकि वे चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में सेवा करने के योग्य बन सकें।

1. शैक्षिक अर्हताएं

(I) बी० एस० एम० एस० की प्रवेश परीक्षा में एस० एस० एल० सी० उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को प्राग–विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम की भाग–III उन्नत उत्तीर्ण करना चाहिए अथवा पूर्णतः तमिल उत्तीर्ण या प्राग विश्वविद्यालय के भाग–III के अधीन केवल उन्नत तमिल में उत्तीर्णता का प्रमाण–पत्र रखने वाले बी० ए० या बी० एस० सी० छात्र।

(II) वय

पाठ्यक्रम में प्रवेश वाले वर्ष की 15 जुलाई को वय आयु 15 वर्ष 6 माह पूर्ण होनी चाहिए।

(III) पाठ्यक्रम की अवधि

पाठ्यक्रम की अवधि 6 माह के विशिखानुप्रवेश सहित 5/1/2 वर्ष होगी।

(क) प्रथम बी० एस० एम० एस० पाठ्यक्रम	एक वर्ष
(ख) द्वितीय बी० एस० एम० एस० पाठ्यक्रम	एक वर्ष
(ग) तृतीय बी० एस० एम० एस० पाठ्यक्रम	1/1/2 वर्ष
(घ) अंतिम बी० एस० एम० एस० पाठ्यक्रम	1/1/2 वर्ष
(ङ) विशिखानुप्रवेश	6 मास

विशिखानु प्रवेश के पश्चात् उपाधि

(IV) उपाधि का नाम

स्नातकीय पाठ्यक्रम की उपाधि सिद्ध मरूथुवा अरिग्नर, बेचलर आफ सिद्ध मेडीसन एंड सर्जरी (बी० एस० एम० एस०) होगी जो अभ्यर्थी को उसके सफलतापूर्वक योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण करने एवं देशी चिकित्सा पद्धति के किसी मान्य अस्पताल में 6 माह के विशिखानुप्रवेश का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने के पश्चात् प्रदान की जायेगी।

(V) पाठ्यक्रम का नियम न करने वाली निकाय

1970 के अधिनियम के अधीन स्थापित भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् मान्यता प्रदान करेगी तथा समान स्तर बनाये रखने की दृष्टि से स्नातकीय एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का नियमन करेगी।

(VI) परीक्षा निकाय

मान्य विश्वविद्यालय जिससे भारतीय चिकित्सा पद्धति का महाविद्यालय सम्बद्ध है परीक्षा निकाय होगा।

(क) शिक्षा का माध्यम :—इस पाठ्यक्रम के लिए शिक्षा का माध्यम तमिल होगा।

VII) परीक्षाएं

स्नातकीय पाठ्यक्रम में निम्न परीक्षाएं होंगी :—

(क) प्रथम बी० एस० एम० एस० परीक्षा: प्रवेश के तीन शैक्षिक काल के अन्त में अथवा एक वर्ष के पश्चात्।

(ख) द्वितीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा : प्रथम बी० एस० एम० एस० परीक्षा के तीन शैक्षिक कालों के अन्त में अथवा एक वर्ष पश्चात्।

(ग) तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा : द्वितीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा के चार शैक्षिक कालों के अन्त में डेढ़ वर्ष पश्चात्।

**(ङ) वर्ष में तीन परीक्षाएं होंगी अर्थात् अक्तूबर, दिसम्बर और अप्रैल में।

प्रथम बी० एस० एम० एस० का अध्ययन पाठ्यक्रम

प्रथम बी० एस० एम० एस० परीक्षा में स्वयं को उपस्थित करने से पूर्व उम्मीदवार निम्न विषयों में निर्देशों के मान्य पाठ्यक्रम में उपस्थित रहने का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेगा :—

(i) तीन कालों (लगभग 216 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए थोतरा किरामन एवं मुरुथुवा वरालरु में व्याख्यानों का पाठ्यक्रम।

(ii) तीन कालों (लगभग 252 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए मुरुथुवा थवारा इयाल में व्याख्यानों, निर्देशन व प्रायोगिकों का पाठ्यक्रम।

(iii) तीन कालों (लगभग 144 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए वेधियाल में व्याख्यान एवं निर्देशन का पाठ्यक्रम।

(iv) तीन कालों (लगभग 144 घंटे) की अवधि व्याप्त करते हुए बौथिगम में व्याख्यान एवं निर्देशन का पाठ्यक्रम।

(v) तीन कालों (लगभग 108 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए वलंगीयाल में व्याख्यान एवं निर्देशन का पाठ्यक्रम।

**(घ) चतुर्थ बी० एस० एम० एस० परीक्षा : तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा के चार शैक्षिक कालों के अन्त में अथवा डेढ़ वर्ष पश्चात्।

(vi) प्रथम एवं द्वितीय अध्ययन वर्ष (प्रथम पाठ्यक्रम लगभग 144 घंटे) में विस्तारित छह कालों की अवधि को व्याप्त करते हुए उदल कुरुगल के व्याख्यानों एवं प्रदर्शनों का पाठ्यक्रम जिसमें सम्पूर्ण मानव शरीर का शवच्छेदन भी सम्मिलित होगा।

(vii) प्रथम एवं द्वितीय अध्ययन वर्ष (प्रथम पाठ्यक्रम लगभग 72 घंटे) में विस्तारित छह कालों की अवधि को व्याप्त करते हुए उदल थथ्युवम पर व्याख्यानों का पाठ्यक्रम जिसमें चुने हुए प्रत्यक्ष कर्माभ्यास की कक्षाएं भी सम्मिलित होंगी।

(vii) प्रथम एवं द्वितीय अध्ययन वर्ष (प्रथम पाठ्यक्रम लगभग 144 घंटे) में विस्तारित छह कालों की अवधि व्याप्त करते हुए गुणापाढम–मूलिगई पर व्याख्यानों एवं प्रायोगिकों का पाठ्यक्रम।

(ix) प्रथम एवं द्वितीय अध्ययन : वर्ष (प्रथम पाठ्यक्रम लगभग 72 घंटे) में विस्तारित छह कालों को व्याप्त करते हुए गुणपाढम जंमम पर व्याख्यानों व प्रायोगिकों का पाठ्यक्रम परीक्षायोजना– प्रथम बी० एस० एम० एस० की परीक्षा योजना में तीन भाग होंगे जो तीन अध्ययन काल के अन्त में ली जाय।

भाग–I

	घंटे	अंक
थोतरा किरमाल अराची और मरुथुवा वारालरु		
लिखित	3 घंटे	100
मौखिक	—	50

भाग–II

	घंटे	अंक
1. मरुथुवा थावरा इयाल		
लिखित	3 घंटे	10
प्रायोगिक	3 घंटे	100
मौखिक		5
2. बिलंगु इयाल		
लिखित	3 घंटे	100
मौखिक	--	50

भाग–III

	घंटे	अंक
1. वेधियाल		
लिखित	3 घंटे	100
मौखिक	--	50
2. बौथिकम		
लिखित	3 घंटे	100
मौखिक	--	50

प्रयोगशाला अभ्यास पुस्तिका प्रस्तुतिकरण-अभ्यथी भाग-II (i) में सम्मिलित विषयों की प्रायोगिक परीक्षा में परीक्षकों के निरीक्षणार्थ अपने व्याख्याताओं द्वारा प्रमाणित अपने मूल प्रायोगिक अभिलेख, अभ्यास पुस्तिकायें तथा प्रायोगिक पत्र लायेगा जो अभ्यर्थी द्वारा प्रायोगिक कक्षा में किए गए वास्तविक कार्य के सूचक होंगे।

अभ्यर्थी को प्रायोगिक परीक्षा में अपनी प्रायोगिक अभ्यास पुस्तिकाएं अथवा पत्रों का उपयोग करने की अनुमति दी जाये। प्रायोगिक एवं मौखिक परीक्षा में परीक्षकों द्वारा उम्मीदवार के कक्षा अभिलेखों को संदर्भित किया जाय।

<u>प्रवेश के लिए पात्रता--</u>

<u>अध्ययन की अवधि</u> :—कोई भी अभ्यर्थी परीक्षा के किसी भी भाग में तब तक प्रविष्ट नहीं किया जाएगा जब तक :—

(1) प्रवेश के लिए वह सीमा सम्बन्धी प्रावधानों का अनुसरण करने का संतोषजनक प्रमाण प्रस्तुत न किया हो, तथा

(2) अध्ययन का विहित प्रमाण पत्र प्रस्तुत न किया हो।

<u>उपस्थिति का प्रमाण-पत्र</u>—अभ्यर्थी की सभी विषयों में कम से कम 80 प्रतिशत उपस्थिति होना होगा।

उत्तीर्ण होने के लिए योग्यता अंक–यदि अभ्यर्थी भाग–I, II, III के प्रत्येक विषय में एक साथ लिखित एवं मौखिक परीक्षाओं में आधे से कम अंक तथा भाग–II (i) मरुथुवा थावरे इयाल में प्रायोगिक परीक्षाओं में आधे से कम अंक प्राप्त नहीं करता है तो उसे बी० एस० एम० एस० की प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा।

अन्य सभी अभ्यर्थी परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण माने जायेंगे।

<u>विषयों में पुनर्परीक्षा से छूट</u>

जो अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं किंतु किसी विषय में उत्तीर्णता अंक प्राप्त कर लेते हैं उन्हें इस विषय में पुनर्परीक्षा से छूट दी जाएगी।

<u>अनुत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए आगे अध्ययन</u> :—किसी विषय में अनुत्तीर्ण अभ्यर्थी को उस अवधि के लिए जो सफलता देने वाली आगामी परीक्षा तक पढ़ाई जाएगी, मैं आगे अध्ययन करने का एक प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना आवश्यक होगा।

द्वितीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा

अभ्यर्थी द्वितीय बी० एस० एम० एस० की परीक्षा में स्वयं को प्रस्तुत करने से पूर्व प्रथम बी० एस० एम० एस० की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर और साथ ही निम्न विषयों में मान्य निर्देशावधि में उपस्थित होने का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करेगा :—

(i) तीन कालों (लगभग 432 घंटे) को व्याप्त करते हुए उदल कूरुगल में व्याख्यानों एवं निदर्शनों की अवधि जिसमें सम्पूर्ण मानव शरीर का शवच्छेदन (दूसरा पाठ्यक्रम) भी सम्मिलित होगा।

(ii) तीन कालों (लगभग 216 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए उदल थथुजांगमम् व्याख्या अवधि जिसमें चुनी हुई प्रायोगिक कक्षाएं भी सम्मिलित होगी।

(iii) तीन कालों (लगभग 432 घंटे द्वितीय पाठ्यक्रम) की अवधि व्याप्त करते हुए गुणपादम (मूलिगई) में व्याख्यानों एवं किए गए प्रायोगिकों की अवधि।

(iv) तीन कालों (216 घंटों से अधिक द्वितीय पाठ्यक्रम) की अवधि को व्याप्त करते हुए गुणपाढम (थथु-जांगमम्) में व्याख्यानों एवं किए गए प्रायोगिकों की अवधि।

परीक्षाओं की योजना :—द्वितीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा में दो भाग होंगे।

टिप्पणी :—गुणपादम (मूलिगई एवं थथु जांगमम्) पर निर्देशों की अवधि में निदर्शन और विभिन्न प्रकार के औषध योगों का निर्माण तथा एक काल की अवधि के लिए रसशाला (फामसी) में उपस्थिति सम्मिलित होगी।

भाग- I

	घंटे	अंक
1. उट्टूल कूरुगल		
लिखित	3	100
मौखिक	—	50
प्रायोगिक	3	100
2. उदल थथुवम		
लिखित	3	100
मौखिक	—	50

भाग-II

1. गुणपाडम् (मूलिगई)		
लिखित	3	100
मौखिक	—	50
प्रायोगिक	3	100
2. गुणपाडम (थथु जांगमम्)		
लिखित	3	100
मौखिक	—	50
प्रायोगिक	3	100

प्रयोगशाला अभ्यास पुस्तिका प्रस्तुतिकरण—अभ्यर्थी भाग-II में सम्मिलित विषयों की प्रायोगिक परीक्षा में परीक्षकों के निरीक्षणार्थ अपने व्याख्याता द्वारा प्रमाणित अपने मूल प्रायोगिक अभिलेख, अभ्यास पुस्तिकाएं तथा प्रायोगिक पत्र लाएगा जो अभ्यर्थी द्वारा प्रयोगिक कक्षा में किए गए वास्तविक कार्य के सूचक होंगे।

अभ्यर्थी को प्रायोगिक परीक्षा में अपनी प्रायोगिक अभ्यास पुस्तिकाएं अथवा पत्रों का उपयोग करने की अनुमति दी जाय। प्रायोगिक एवं मौखिक परीक्षा में परीक्षण द्वारा अभ्यर्थी के कक्षा अभिलेखों की संदर्भित किया जाय।

परीक्षाएं खंडों या सम्पूर्ण रूप में ली जायें—शर्तें

अभ्यर्थी एक समय में सम्पूर्ण परीक्षा के लिए स्वयं उपस्थित हों अथवा उन्हें दो भागों में लिया जा सकता है, बशर्ते कि प्रथम बी० एस० एम० एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने पर परीक्षा छह अध्ययन काल पूर्ण करने के बाद ली जावें।

यदि अभ्यर्थी प्रत्येक विषय में एक साथ लिखित एवं मौखिक परीक्षा में आधे से कम अंक प्राप्त नहीं करता है तो द्वितीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा के लिए अभ्यर्थी को परीक्षा के प्रथम भाग में उत्तीर्ण घोषित किय जाएगा।

यदि अभ्यर्थी प्रत्येक विषय में एक साथ लिखित व मौखिक परीक्षा में आधे से कम अंक प्राप्त नहीं करता है और इन विषयों की प्रायोगिक परीक्षाओं में आधे से कम अंक प्राप्त नहीं करता है तो उसे परीक्षाओं के भाग-II में उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा।

अन्य सभी अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण माने जायेंगे।

विषय में पुनर्परीक्षा से छूट

जो अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं किन्तु किसी विषय में उत्तीर्णता अंक प्राप्त करते हैं, उस विषय में पुनर्परीक्षा से छूट दी जाएगी।

अनुत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए आगे अध्ययन

उन अभ्यर्थियों को, जो किसी विषय अथवा विषयों में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, उस अवधि के लिए जो आगामी सफल परीक्षा को व्याप्त करेगी, आगे अध्ययन करने का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना आवश्यक होगा।

तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा।

अभ्यर्थी बी० एस० एम० एस० परीक्षा में बैठने से पूर्व।

(क) द्वितीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण पत्र पस्तुत करेगा।

(ख) निम्न विषयों के अध्ययन में व्यस्त रहा है :—

1. पांच कालों (लगभग 180 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए नोई अनुमा विथी आझुक्कम, नोयई-इथिराथु काथनु एवं पोथु नाल वझवु के व्याख्यानों एवं निदर्शन की अवधि।

2. पांच कालों (लगभग 360 घंटों) की अवधि को व्याप्त करते हुए नोईनदल नोईमुदल नदल (एनवगई थेरयल सहित) व्याख्यानों व निदर्शनों की अवधि जिसमें नुनकीरुगीगल और वरीथंगल आदि के निदर्शन भी सम्मिलित होंगे।

3. पांच कालों (लगभग 180 घंटों) की अवधि को व्याप्त करते हुए नानजू नूल और मरुथुवा नीधि नूल में व्याख्यानों एवं निदर्शनों की अवधि जिसमें पिना परियोथनई के निदर्शन भी सम्मलित होंगे।

4. पांच कालों (लगभग 300 घंटों) की अवधि को व्याप्त करते हुए सिद्ध मरुथुवम् के व्याख्यानों एवं चिकित्सीय प्रशिक्षण के प्रथम पाठ्यक्रम में उपस्थित हुआ हो जिसमें नोईगलिनिन परिशोनई भी सम्मलित होंगे।

5. पांच कालों (लगभग 240 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए सिद्ध अरुवई मरुथुवम् के व्याख्यानों एवं चिकित्सीय प्रशिक्षण के प्रथम पाठ्यक्रम में उपस्थित हुआ हो जिसमें मुथल उदयी और पट्टी कत्तुघल भी सम्मिलित होंगे।

6. पांच कालों (लगभग 180 घंटे) की अवधि को व्याप्त करते हुए सूल मरुथुवम और करपीनी थरकप्पू के व्याख्यानों एवं चिकित्सीय प्रशिक्षण के प्रथम में पाठ्यक्रम उपस्थित हुआ हो जिसमें कारु उर्पत्ती का अध्ययन भी सम्मिलित होगा।

: मद (iv), (v) एवं (vi) तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा के लिए नहीं है ।

परीक्षा योजना—तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा के दो भाग होंगे :—

भाग–I

	घंटे	अंक
गोई अंगुआ–विथि–ओझुकम आदि —		
लिखित . . .	3	100
मौखिक . . .	—	50
नोई नदल, संख्या 1 मुदल नदल आदि—		
लिखित . . .	3	100
मौखिक . . .	—	50

भाग–II

नानलू नूल मस्थुवा वीथिनूल		
लिखित . . .	3	100
मौखिक . . .	—	50

उत्तीर्णता के लिए योग्यता अंक—यदि अभ्यर्थी (i) लिखित एवं मौखिक क्षाओं में एक साथ भाग–I तथा II के प्रत्येक विषय में आधे से कम प्राप्त नहीं करता है तो उसे तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा के ग–I और II में उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा ।

(ii) में अन्य समस्त अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण समझें जाऐंगे ।

विषय की पुनः परीक्षा से छूट—जो अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए केन्तु किसी विषय में उत्तीर्णता अंक प्राप्त किए हैं, उन्हें उस विषय की : परीक्षा से छूट होगी ।

अनुत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए आगे अध्ययन—जो अभ्यर्थी तृतीय बी० ा० एम० एस० परीक्षा के भाग–I और भाग II में किसी विषय में अनुत्तीर्ण उन्हें उस अवधि के लिए जो आगामी सफल परीक्षा तक वितरित हो अतिरिक्त उपस्थिति देना आवश्यक होगा ।

चतुर्थ या अंतिम बी० एस० एम० एस० परीक्षा—अंतिम बी० एस० एम० स० परीक्षा के लिए स्वयं को प्रस्तुत करने से पूर्व अभ्यर्थी (क) प्रथम, तीय एवं तृतीय बी० एस० एम० एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण-त्र प्रस्तुत करेगा । (ख) प्रत्येक निम्न विषय (i) सिद्ध मस्थुवम वपोथू) (ii) द्ध मस्थुवम (सिद्ध) (iii) सिद्ध अस्काई मस्थुवम एवं सिद्ध सूल मस्थुवम ादि के लिए 9 कालों की अवधि के लिए विस्तारित 3 शैक्षिक वर्षों के लए विषयों के अध्ययन में संलग्न रहा है तथा तत्सम्बन्धी प्रमाण-पत्र स्तुत करेगा ।

परीक्षा की अवधि—परीक्षा के लिए अंतिम बी० एस० एम० एस० विषय के व्याख्यानों एवं चिकित्सीय प्रशिक्षण की अवधि निम्न प्रका होगी :—

(क) मस्थुवम (पोथू)—3 शैक्षिक वर्ष—लगभग 732 घंटे—के लिए (9 काल)

(ख) मस्थुवम (सिराप्पू)—1/1/2 शैक्षिक वर्ष—लगभग 144 घंटों—के लिए (9 काल)

(ग) अस्वाई मस्थुवम—3 शैक्षिक वर्षों—लगभग 528 घंटे–के लिए (9 काल)

(घ) शूल मस्थुवम मगलिर पिल्लई पिनि मस्थुवम आदि सहित–3 शैक्षिक वर्ष–लगभग 468 घंटों के लिए (9 काल)

अन्तिम बी० एस० एम० एस० परीक्षा के लिए परीक्षा योजना निम्न प्रकार होगी :—

भाग-i

	घंटे	अंक
1. मस्थुवम (पोथू)		
लिखित . . .	3	100
निम्न से युक्त चिकित्सीय परीक्षा		
(1) एक घंटे का एक बड़ा केस		
(2) आधे घंटे के तीन छोटे केस .	—	100
मौखिक . . .	—	50
2. मस्थुवम् (सीरप्पु)		
लिखित . . .	3	100
केवल एक लम्बे केस की चिकित्सीय परीक्षा .	1	100
मौखिक . . .	—	50

भाग–II

1. अस्वई मस्थुवम्		
लिखित . . .	3	100
एक घंटे के एक बड़े केस एवं आधा घंटे के तीन छोटे केसों की चिकित्सीय परीक्षा		
मौखिक . . .	—	50
2. शूल मस्थुवम् आदि		
लिखित . . .	3	100
एक घंटे के एक बड़े केस की और आधे घंटे के तीन छोटे केस की चिकित्सीय परीक्षा .	—	100
मौखिक . . .	—	50

उत्तीर्णता के लिए योग्यता अंक :—यदि अभ्यर्थी (क) भाग–I और II के प्रत्येक विषय की एक साथ लिखित एवं मौखिक परीक्षा में आधे से कम अंक प्राप्त नहीं करता है (ख) भाग–I और II के प्रत्येक विषय की चिकित्सीय परीक्षा में आधे से कम अंक प्राप्त नहीं करता है तो वह अंतिम बी० एस० एम० एस० परीक्षा के भाग–I और II में उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा । अन्य सभी अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण माने जाएंगे ।

विषयों में पुनंपरीक्षा से छूट—जो अभ्यर्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं किन्तु किसी विषय में उत्तीर्णता अंक प्राप्त कर लेते हैं तो उन्हें उस विषय में पुनपरीक्षा से छूट होगी ।

अनुत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए आगे अध्ययन—

जो अभ्यर्थी अंतिम बी० एस० एम० एस० परीक्षा के भाग–I और II किसी विषय में अनुतीर्ण हो जाते हैं तो उन्हें उस अवधि के लिए जो आगामी परीक्षा तक व्याप्त होगी के अतिरिक्त उपस्थिति देना आवश्यक होगा ।

उन अभ्यर्थियों जिन्होंने बी० एस० एम० एस० के अंतिम वर्ष की परीक्षा उतीर्ण कर ली है को उपाधि में प्रवेश से पूर्व भारतीय चिकित्सा के किसी मान्य अस्पताल में किसी मान्य चिकित्सा अधिकारी के अधीन विशिखानु प्रवेश में रखगे ।

ऐसे अभ्यर्थी उपाधि प्रदान किए जाने से पूर्व छात विशिखानुप्रवेश की संतोषजनक पूर्णता का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेंगे ।

अनुसूची—III

(विनियम 7 देखें)

कामिल–ए–तिब्ब–ओ–जराहत–पाठ्यक्रम के न्यूनतम मानक

यूनानी शिक्षा का उद्देश्य एवं प्रयोजन

यूनानी के सक्षम चिकित्सक तैयार करना जो जहां आवश्यक हो वहां आधुनिक प्रगतियों के साथ यूनानी चिकित्सा पद्धति के आधारभूत सिद्धान्तों एवं मौलिक सिद्धान्तों के अपने विस्तृत ज्ञान पर आधारित कार्य चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा के सभी प्रकार के रोगियों को संभाल सकें । ऐसे यूनानी स्नातक देश की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में कार्य करने के लिए पूर्णतया सक्षम होंगे ।

2. प्रवेश अर्हता

सीनियर सैकेण्डरी (12वीं कक्षा)/इन्टरमीडिएट अथवा समकक्ष प्राप्य अर्हता। वे बी० यू० एम० एस० के मुख्य 5 वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए पात्र होंगे।

अथवा

दो वर्षीय प्राग तिब्ब पाठ्यक्रम के लिए एस० एस० एल० सी०/मैट्रिक या समकक्ष प्राप्य अर्हता।

टिप्पणी :—उन्हें प्राथमिकता दी जायेगी जो अरबी या फारसी में दक्ष हों। उन राज्यों के मामले में एक वर्ष की अवधि वाला प्राग तिब्ब-पाठ्यक्रम भी जारी रहे जहां शिक्षा का 10+2 ढांचा अभी तक लागू नहीं हुआ है।

3. प्रवेश के लिए न्यूनतम वय

(क) प्राग तिब्ब पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए प्रवेश वर्ष में प्रथम अक्तूबर को 15 वर्ष।

(ख) प्राग तिब्ब पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष के लिए प्रवेश में प्रथम अक्तूबर को 16 वर्ष।

(ग) मुख्य यूनानी पाठ्यक्रम के लिए प्रथम अक्तूबर को 17 वर्ष।

4. पाठ्यक्रम की अवधि

1. प्राग तिब्ब पाठ्यक्रम . . .	एक वर्ष/दो वर्ष
2. मुख्य पाठ्यक्रम . . .	5 वर्ष
3. विशिष्टानुप्रवेश . . .	6 माह

5. पाठ्यक्रम की सफलतापूर्वक पूर्णता के पश्चात् प्रदान की जाने वाली उपाधि। कामिल-ए-तिब्ब-ओं-जराहत (बैचलर आफ यूनानी मेडीसिन एण्ड सर्जरी)

6. निर्देश का माध्यम

निर्देश का माध्यम उर्दू होगा जो जहां आवश्यक होगा वहां अंग्रेजी से प्रमाणित होगी। जहां उर्दू जानने वाले छात्र उपलब्ध नहीं हो वहां शिक्षण सुविधाएं (पाठ्यग्रंथों सहित) हिन्दी या प्रान्तीय भाषा में प्रदान की जावें और माध्यम में परिवर्तन अपनाया जाए।

अध्ययन के पाठ्यक्रम में आवश्यक आधुनिक विकासों को सम्मिलित किया जाएगा, ऐसी स्थिति में शब्दावली अरबी समतुल्य के साथ आधुनिक मानक शब्दावली होगी। यूनानी के लिए शब्दावली आवश्यक रूप से यूनानी शब्दावली रहेगी।

7. प्रागति पाठ्यक्रम में व्याख्यानों की संख्या

विषय	व्याख्यानों की कुल संख्या			
	दो वर्षीय पाठ्यक्रम		एक वर्षीय पाठ्यक्रम	
	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक
तबीयात	300	80	200	50
कीमिया	300	80	200	50
नबातियात	200	50	125	30
हैवानियात	200	50	125	30
अरबी	250	—	125	—
मन्तिक-ओ-फलसफा	100	—	50	—
अंग्रेजी	250	—	125	—
	1600	260	950	160

व्याख्यानों की अवधि

सैद्धान्तिक व्याख्यानों के लिए न्यूनतम अवधि 45 मिनट और प्रायोगिक के लिए एक घंटा होना चाहिये।

कुछ विषयों में परीक्षा देने की छूट

प्राच्य अर्हता वाले छात्रों को अरबी और मन्तिक-ओ-फलसफा विषयों में प्रविष्ट होने की छूट दी जानी चाहिए। इसी प्रकार एक विषय के रूप में अंग्रेजी सहित मैट्रिक और उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों को अंग्रेजी विषय में प्रविष्ट होने से छूट दी जानी चाहिये।

8. मुख्य पाठ्यक्रम में परीक्षा के विषय

प्राग चिकित्सीय

प्रथम वर्ष

1. तशरीह (रचना शारीर)
2. मुनाफे-उल-आजा (क्रिया शारीर)
3. उमूर-ए-तबीया (तिब्ब के मूल सिद्धान्त)
4. इलमुल अदविया (कुल्लियात-ए-अदविया) द्रव्यगुण के सिद्धान्त।

परीक्षाएं—3 और 4 सैद्धान्तिक

द्वितीय वर्ष

1. तशरीह-(रचना शरीर)
2. मुनाफे-उल-आजा (क्रिया शरीर),
3. हिफ्जाने-सेहत-ओ-तहफ्फुज-ओ-समाजी-तिब्ब-(स्वास्थ्य विज्ञान निवारक और सामाजिक चिकित्सा।)

परीक्षा—1, 2, 3, 4 प्रायोगिक एव सैद्धान्तिक।

चिकित्सीय

तृतीय वर्ष

1. तिब्ब-ए-कानूनी-ओ-इलमुल-समूम (अगदतंत्र और विष-विज्ञान)
2. इलमुल अमराज-ओ-इलमुल जरासीम (विकृति विज्ञान और जीवाणु विज्ञान)।
3. मुआलियात (काय चिकित्सा)
4. इलमुल अदविया (मुरक्कबात-व-सैदला) (द्रव्यगुण एवं रसशास्त्र)
5. सरीरिज़ात (उसूल-ए-तशखीस-ओ-तजवीज) शरीरयात-निदान एवं चिकित्सा के सिद्धान्त) परीक्षाएं—1, 2, 4 और 5—सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक।

चतुर्थ वर्ष

1. मुआलिजात जुज-II (काय चिकित्सा भाग-II)
2. कबालत-ओ-मुताल्लिका अमराज (प्रसूति तंत्र)
3. अमराज-ए-निसवान-ओ-अतफाल (स्त्रीरोग एवं बालरोग)
4. तारीख-ए-तिब्ब (तिब्ब का इतिहास)
5. मतब (नैदानिक)

परीक्षाएं—2 और 3 सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक तथा 1 और 4 सैद्धान्तिक।

पंचम वर्ष

1. मुआलिजात जुज-III (कायचिकित्सा भाग-III)
2. अमराज-ए-एन-उज्न, अनफ, हलक-ओ-असनान (आंख, नाक, कान, गला और दांत के रोग)
3. जराहितयत (शल्य)
4. मतब (नैदानिक)

परीक्षाएं—2 और 3 सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक 1 और 4 प्रायोगिक।

शिक्षण योजना

यूनानी पाठ्यक्रम के प्रत्येक वर्ष और विषय के लिए व्याख्यानों का आवंटन निम्न प्रकार होगा—

प्रथम व्यावसायिक पाठ्यक्रम

विषय	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	योग
1. तशरीह-उल-बदन (रचना शरीर)	100	75	175
2. मुनाफे-उल-आजा (क्रिया शरीर) . .	120	30	150
3. उमूर-ए-तिबिया (तिब्ब के मूल सिद्धांत) . .	150	—	150
4. इलमुल अदविया (द्रव्यगुण) कुल्लियात-ए-अदवियां (द्रव्यगुण के सिद्धांत)	150	—	150
			625

द्वितीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम

1. तशरीह-उल-बदन (रचना शरीर) . .	100	75	175
2. मुनाफे-उल-आजा (क्रिया शरीर) . .	120	30	150
3. इलमुल-अदविया (मुफरदात) (द्रव्यगुण) . .	125	75	200
4. हिफ्जान-ए-सेहत, तहफ्फुज-ओ-समाजी तिब्ब (स्वास्थ्य विज्ञान, निवारक और सामाजिक चिकित्सा) .	125	25	150

तृतीय व्यवसायिक पाठ्यक्रम

1. इलमुल-अदविया (मुरक्कबात-ओ-सेदला) (द्रव्यगुण) (औषधि एवं रसशास्त्र) .	100	100	200
2. शरीरियात (उसूल-ए-तशखीस-ओ-इलाज) (निदान एवं चिकित्सा विज्ञान) .	100	100	200
3. इलमुल-अमराज (अहवाल-असबाब-अलामात-ओ इलमुल-जरासीम) (विकृति विज्ञान) . .	150	50	200
4. तिब्ब-ए-कानूनी-ओ-इलमुल—समूम (अगदतंत्र व विष विज्ञान) . .	125	25	150
5. मुआलिजात भाग-I (कायचिकित्सा भाग-I)	150	—	150
			900

चतुर्थ व्यावसायिक पाठ्यक्रम

1. इलमुल-कबालत-ओ-मुतल्लिका-अमराज (प्रसूति तंत्र)	100	×	100
2 मुआलिजात भाग-II (कायचिकित्सा भाग-II)	100	×	100
3. अमराज-ए-निसवान-ओ-अतफाल (स्त्रीरोग एवं बालरोग) . .	150	×	150-
4. मतब (नैदानिक) .	150	×	150
5. तारीख-ए-तिब्ब (तिब्ब का इतिहास)	50	×	50
			550

पंचम (अंतिम) व्यावसायिक पाठ्यक्रम

1. जराहियात (शल्य चिकित्सा)	100	×	100
2. मुआलिजात भाग-III (काय चिकित्सा भाग-III)	150	X	150
3. मतब (नैदानिक)	150	×	150
4. अमराज-ए-एन-अनफ-उज्न-हलक आदि (आंख, नाक, कान गला आदि के रोग)	100	×	100

*उन सभी विषयों में प्रयोगिक प्रशिक्षण अन्तरंग एवं बहिरंग विभागों में एक माह से कम अवधि का नहीं होगा ।

9. परीक्षा की योजना

कुल छः परीक्षाएं होंगी जो क्रमशः प्राग-तिब्ब, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम व्यवसायिक परीक्षाएं कहलाएंगी । इनमें से प्रत्येक परीक्षा वर्ष में दो बार सामान्यतः अप्रेल/मई और अक्टूबर/नवम्बर माह में होगी ।

व्यवसायिक पाठयक्रमों के लिए विहित परीक्षाएं जब भी आवश्यक हो, लिखित प्रश्न पत्र प्रायोगिक, नैदानिक और मौखिक परीक्षा अथवा इन विधियों में से किन्ही के संयोजन के द्वारा प्रवृत्त की जावें ।

परीक्षा योजना

(प्रागू-तिब्ब-पाठ्यक्रम)

विषय	सैद्धांन्तिक				प्रायोगिक		अंक योग			
	प्रश्न पत्रों की संख्या	प्रत्येक पत्र की अवधि	प्रति पत्र अंक	अभिलेख पुस्तिका	क्रियात्मक	मौखिक	योग	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक एवं मौखिक	कुल योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1 कीमिया (रसायन शास्त्र) . . .	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका	50	—	150	100	50	150
2. तबीयात (भौतिकी) . . .	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका	50	—	150	100	50	150
3. हैवानियात (जन्तु विज्ञान) . . .	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका	50	—	150	100	50	150

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
					1 अभिलेख						
4.	नबातियात (बनस्पति विज्ञान)	1	3 घंटे	100	पुस्तिका	50	—	150	100	50	150
5.	अरबी	1	3 घंटे	100	—	—	—	—	100	—	100
6.	मन्तिक-ओ-फलसफा-ओ-इलमुल-नोह	1	3 घंटे	50	—	—	—	—	—	—	50
7.	अंग्रेजी	1	3 घंटे	150	—	—	—	—	—	—	150
										योग	900
					प्रथम व्यावसायिक						
1.	उमूरे-ए-तिबिया (तिब्ब के सिद्धांत)	1	3 घंटे	100	—	50	—	50	100	50	150
2.	इलमुल अदविया (द्रव्यगुण)	1	3 घंटे	100	—	50	—	50	100	50	150
										योग	300
					द्वितीय व्यावसायिक						
1.	मुनाफ उल-आजा (क्रिया शरीर)	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका 20	50	30	100	100	100	200
2.	तशरीह-उल बदन (रचना शरीर)	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका 20	50	30	100	100	100	200
3.	इलमुल-अदविया (मुफादात) द्रव्यगुण एकौषधि	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका 20	—	30	50	100	50	150
4.	हिफजान-ए-सेहत (स्वस्थवृत्त)	1	3 घंटे	100	—	—	50	50	100	50	150
										योग	700

अवधेय :—प्रायोगिक के लिए नियम 50 अंकों में से 10 अंक अभिलेश पुस्तिका के लिए होंगे।

					तृतीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम						
1.	इलमुल अदविया (मुरक्कबात-ओ सैदला) (द्रव्यगुण औषधि एवं रसशास्त्र)	1	3 घंटे	100	अभिलेख पुस्तिका 20	50	30	100	100	100	200
2.	सरीरियात (उसूल ए-तशखीस-ओ इलाज) (निदान एवं चिकित्सा के सिद्धांत)	1	3 घंटे	100	—	50	—	50	100	50	150
3.	इलमुल-अमराज (विकृति विज्ञान)	1	3 घंटे	100	—	30	20	50	100	50	150
4	तिब्ब-ए-कानूनी-ओ-इल्मू-ए-समूम (अगदतंत्र एवं विष विज्ञान)	1	3 घंटे	100	—	—	50	50	100	50	150
											650
					चतुर्थ व्यावसायिक						
1.	इलमुल-कबालात-ओ-मुताल्लिका-अमराज (प्रसूति तंत्र)	1	3 घंटे	100	—	—	50	100	50	50	150
2.	तारीख ए तिब्ब (तिब्ब का इतिहास)	1	3 घंटे	100	—	—	—	—	100	—	100
3.	अमराजे निसवान-ओ-अतफाल (स्त्री रोग एवं बालरोग)	1	3 घंटे	100	—	50	50	100	100	100	200
										योग	450
					पंचमः (अंतिम) व्यावसायिक						
1.	जर्राहियात (शल्य)	1	3 घंटे	100	—	50	50	100	100	100	200
2.	मुआलिजात (काय चिकित्सा)	2	3 घंटे	100	—	—	—	100	200	100	300
3.	अमराज-ए-एन-अनफ हलक, उज्न आदि (आंख, नाक, कान, गला आदि के रोग)	1	3 घंटे	—	—	50	—	50	100	50	150
4.	मतब (नैदानिक)	1	—	—	—	80/20	—	100	—	—	100
										योग	750

निबंधक
भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद

शैक्षिक कर्मचारियों के लिए विहित अर्हताएं

अध्यापकों की अर्हताएं

(क) चिकित्सा विषयों के लिए

अनिवार्य

1. विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय अथवा सांविधक/मंडल/संकाय भारतीय चिकित्सा की परीक्षा निकाय से यूनानी चिकित्सा की उपाधि/अधिकार-पत्र या उसके समकक्ष।

2 प्राध्यापक, रीडर, व्याख्याता के पद के लिए किसी मान्य संस्था में क्रमशः 10 वर्ष, 5 वर्ष एवं 3 वर्ष का अध्यापन अनुभव।

II वांछनीय

1. किसी मान्य संस्था/विधि द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय से यूनानी में स्नातकोत्तर अर्हता।

2. अपने विषय में प्रकाशित मौलिक पत्र/पुस्तकें।

(ख) मौलिक विज्ञान के विषयों के लिए।
संबंधित विषयों में प्रथम अथवा द्वितीय श्रेणी में एम एस० सी०।

(ग) अरबी-विषयों और मन्तिक-ओ-फलसफा के लिए
मन्तिक-ओ-फलसफा सहित अरबी में फाजिल अथवा समकक्ष।

(घ) अंग्रेजी के लिए
अंग्रेजी में प्रथम या द्वितीय श्रेणी में एम० ए०।

राजकुमार जैन, निबंधक
भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद

[Published in the Gazette of India Part III—Sec. 4 on May 31, 1986]

CENTRAL COUNCIL OF INDIAN MEDICINE

ıtral Council of Indian Medicine (Minimum Standards of Education in Indian Medicine) Regulations, 1986

New Delhi-110055, the 15th May 1986

No. 8-3/86-Regl.—In exercise of the powers conferred by use (i) of section 36 of the Indian Medicine Central uncil Act 1970 (48 of 1970) and in supersession of all previous regulations made under said clause (i), except ything done or omitted to be done before such supersion, the Central Council of Indian Medicine, with the evious sanction of the Central Government, hereby makes e following regulations namely :—

1. Short-title . . These regulations may be called the Indian Medicine Central Council (Minimum standards of Education in Indian Medicine) Regulations, 1986.

2. Commencement These shall come into force with immediate effect.

3. Definitions . . (1) Unless the context otherwise requires—

(*a*) "Act" means the Indian Medicine Central Council Act, 1970 (48 of 1970).

(*b*) "The Central Council" means the Central Council of Indian Medicine Constituted under section 3 of the Act.

(*c*) "Recognised institution" means an approved institution as defined under clause (*a*) of sub-section (i) of section 2 of the Act.

(*d*) "Schedule" means Sched ule attached to these regulatio ns;

(2) The words and expressions used in these regulations but not defined shall have the meanings respectively assigned to them in the Act.

4. *Minimum standards of education in Indian Medicine* :

The minimum standards of education in Indian Medicine required for granting recognised medical qualifications by Universities, Boards or Medical institutions in India for Ayurveda, Siddha and Unani Tib shall be as specified in Schedule-I, Schedule II and Schedule III.

5. *Minimum standards for Ayurvedacharya Course* :

The minimum standards for the course of *Ayurvedacharya* shall be as specified in Schedule I.

6. *Minimum standards for Siddha Muruthuva Arigner Course* :

The minimum standards for the course of *Siddha Maruthuva Arigner* shall be as specified in Schedule II.

7. *Minimum standards for the course of Kamil-e-tib-o-Jarahat* :

The minimum standards for the course of *Kamil-e-tib-o-Jarahat* shall be as specified in Schedule-III.

R. K. JAIN
Registrar
Central Council of Indian Medicine

SCHEDULE I

(See regulation 5)

MINIMUM STANDARDS FOR AYURVEDACHARYA COURSE

1. *AIMS AND OBJECTIVES* :

"The Ayurvedic education should aim at producing graduates of profound scholarship having deep basis of Ayurved with scientific knowledge in accordance with Ayurvedic fundamentals who would be able and efficient teachers, research workers and Kayachikitsakas (Physicians) and Shalyachikitsaks (Surgeon) fuliy competent to serve in the medical and health services of the country."

2. *ADMISSION QUALIFICATIONS* :

(i) "Intermediate/12th Standard with Science (Physics, Chemistry and Biology) and Sanskrit.
Wherever provision and facilities for teaching Sanskrit as optional subject are not available at Intermediate/12th standard (Biology Science Group), the students with Intermediate/12th Standard (Biology Science Group) be admitted and Sanskrit be taught in main course.

OR

Uttar Madhyama of Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyala with Science and English.

OR

Any other equivalent qualification recognised by State Governments and State Education Boards concerned with the examination.

(ii) The Pre-Ayurved course of one year duration in respect of Uttarmadhyama or Higher Secondary/ P.U.C. preferably with Sanskrit or an examination equivalent thereto and Pre-Ayurved Course of two years duration in respect of Purvamadhama or S.S.L.C./Matriculation preferably with Sanskrit or an examination equivalent thereto, however, will also continue for a further period of five years.

3. *MINIMUM AGE FOR ADMISSION* :

(a) 15 years as on 1st October in the year of admission for first year of Pre-Ayurvedic Course.

(b) 16 years as on 1st October in the year of admission. for Second year of Pre-Ayurvedic Course.

(c) 17 years as on 1st October in the year of admission for Main Ayurvedic Course.

4. *DURATION OF COURSE* :

(a) Pre-Ayurvedic Course . .	2/1 years
(b) Main Course	5 years
(*c*) Internship . . .	6 months

5. *Degree to be awarded after successful completion of Course*

Ayurvedacharya (Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery).

6. *Medium of Instruction*

Sanskrit, Hindi or any recognised regional language.

7. *Minimum number of students to be admitted in an Ayurvedic College*

he minimum number of students to be admitted in an irvedic College should be 20 for the time being.

Subjects of teaching and Examination :

Subjects of Examination Pre-Ayurvedic Course	Subject of teaching
(1)	(2)
1. Sanskrit	1 Sanskrit
2 Prarambhik Padartha Vigyan	2. Prarambhik Padartha Vigyan
3. Udbhijjang Pratyanga Vigyan	3. Udbhijjang Pratyanga Vigyan
4. Prarambhik Rasashastra Parichya	4. Pararambhik Rasashastra Parichya
5. Ayurved Itihas & Ayurved Parichaya	5. Ayurved Itihas and Ayurved Parichaya
Main Ayurvedic Course	
First year	
1 Padarthavigyan	1. Padarthavigyan
2 Astanga Sangraha	2. Astanga Sangraha (Sutrasthanam)
	3. Sharira rachana Vigyan
	4. Sharirkriya Vigyan
	5. Svasthavritta
Second year	
Subjects of Examination	**Subjects of teaching**
1. Shararachana Vigyan	1. Shararachana Vigyan
2. Sharirakriya Vigyan	2. Sharirakriya Vigyan
3. Swasthavritta (with relevant portions of yoga & nature cure)	3 Swasthavritta (with relevant portions of Yoga & Nature Cure)
	4. Dravyaguna Vigyan
	5 Rasashastra
	6. Bhaishajyakalpana
	7. Roga Vigyan & Vikriti Vigyan

1	2	3	4
	Third year		
	1. Dravyaguna Vigyan	1. Dravyaguna Vigyan	
	2. Rasashastra & Bhaishajaya Kalpana	2. Rasashastra & Bhaishajya Kalpana.	
	3. Roga Vigyan & Vikriti Vigyan	3. Roga Vigyan & Vikriti Vigyan	
	4. Agadtantra & Vyavahara-yurveda.	4 Agadatantra & Vyavhara-yurveda.	
		5. Prasuti Tantra & Stri roga	
	Fourth year		
	1. Charaka Samhita (Purvardha)	1. Charaka Samhita (Purvardh)	
	2 Prasuti Tantra & Stri Roga	2. Prasuti tantra & Stri roga	
	3. Kaumarabhritya	3. Kaumarabhritya	
		4. Kayachikitsa	
		5 Shalakya tantra	
		6. Shalaya tantra	
	Fifth year		
	1 Charaka Samhita (Uttarardh)	1. Charaka Samhita (Uttarardh)	
	2 Kayachikitsa	2. Kayachikitsa	
	3. Shalya tantra	3. Shalyatantra	
	4. Shalakya tantra	4. Shalakya tantra	

9. *Scheme of examination*

The examination for each subject should be held twice in a year in the month of November and April. The question papers shall be in simple Sanskrit but these can be answered in Sanskrit or Hindi or in a recognised regional language which may be the medium of teaching.

10. *Number of papers and marks for each subject*

Subject	Theory		Practical/ Oral	Total Mks
	Number of Papers	Marks		
1	2	3	4	5
Pre-Ayurvedic Subjects				
1. Sanskrit	Ist paper	100	50	
	2nd paper	100		
	3rd paper	100		350
2. Prarambhik Padartha Vigyan	Ist paper	100	50	
	2nd paper	100		250
3. Udbhijjang Pratyang Vigyan	One paper	100	50	150
4. Prarambhik rasashastra Parichya	one paper	100	50	150
5. Ayurved Itihas & Ayurved Parichya	One paper	100	—	100
MAIN AYURVEDIC SUBJECTS				
1. Padartha Vigyan	One paper	100	50	150
2. Astanga Sangraha	One paper	100	—	100
3. Sharira rachana Vigyan	Ist paper	100	200	
	2nd paper	100	—	400

1	2	3	4	5
4. Sharirakriya Vigyan	Ist paper	100	200	
	2nd paper	100	—	400
5. Svasthavritta	Ist paper			
(a) Samajika & roganutpadaka 50		100		
(b) Vaiyaktika 50		100		
(c) Yoga & Nisargopachara 50	2nd paper			
(d) Aharavdhi/Nutrition 50		100	50	250
6. Dravyaguna Vigyan	Ist paper	100	150	350
	~~2nd paper~~	~~100~~		
7. Rasashastra & Bhaishajya-Kalpana	Ist paper	100	150	
	2nd paper	100		350
8. Roga Vigyan & Vikritivigyan	Ist paper	100	100	
	2nd paper	100		300
9. Charakasamhita (Purvardha)	One paper	100	—	100
10. Prasuti tantra & Stri roga	Ist paper	100	100	
	2nd paper	100		300
11. Kaumarabhritya	One paper	100	50	150
12. Agadatantra & Vyavharayurveda	One paper	100	50	150
13. Charakasamhita (Uttarardha)	One paper	100	—	100
14. Kaya Chikitsa	Ist paper	100		
(a) Chiktsa Sidhanta 50				
(b) Siddha Chikitsa 25				
(c) Unani Chikitsa 25				
Jvaradhi Roga Chikitsa	2nd paper	100		
(a) Vatavyadhyadi Chikitsa 50	3rd paper	100	200	
(b) Manasroga Bhutavidya & Yoga Chikitsa 30				
(c) Atyayika Chikitsa 20				
(a) Panchakarma 50	4th paper	100		
(b) Kasayan 25				
(c) Vajikarana 25				
15. Shalya tantra	Ist paper	100	100	
	2nd paper	100		300
16. Shalakya tantra	Ist paper	100	100	
	2nd paper	100		300

11. *Pass Marks*

The pass marks for each subject shall be 50 percent in practical and theory separately. 75 percent and above marks in a subject will indicate distinction in the subject

12. *Number of lectures, practicals and demonstrations for various subjects year-wise.*

Pre-Ayurvedic Course

Subjects	Two years Course		One year Course	
	theory	Practical	theory	Practical
1	2	3	4	5
1. Sanskrit	450	—	300	—
2. Prarambhik padarth Vigyan	300	100	200	50
3. Udbhijjang pratyang Vigyan	200	100	100	50
4. Prarambhik Rasashastra Parichaya	200	100	100	50
5. Ayurvedic itihas and Ayurveda parichaya	150	—	100	—

Main Ayurvedic Course

Subjects	Lectures	Practicals	Demonstrations
1	2	3	4
First Year			
1. Padarthavigyan	125	—	—
2. Astang Sangraha	100	—	—
3. Sharirachana Vigyan	100	75	—
4. Sharirkriya Vigyan	75	20	20
5. Svasthavritta	50	—	—

1	2	3	4	5
Second Year				
1.	Sharirachana Vigyan	100	75	—
2.	Sharirakriya Vigyan	75	20	20
3.	Svasthavritta	50	50	—
4.	Drayyaguna Vigyan	100	20	10
5.	Rasashastra	65	50	10
6.	Bhaishajyakalpana	65	50	10
7.	Rogavigyanam & Vikritivigyan	100	50	—
Third Year				
1.	Dravyaguna Vigyan	100	40	30
2.	Rasa Shastra	65	55	10
3.	Bhaishajyakalpana	65	55	10
4.	Roga Vigyan & Vikritivigan	150	100	
5.	Agadatantra & Vyavaharayurveda	100	50	—
6.	Prasutitantra & Striroga	100	50	—
Fourth Year				
1.	Charaka Samhita	100	—	—
2.	Prasuti tantra & Stri roga	100	50	—
3.	Kaumarabhritya	100	50	—
4.	Kayachikitsa	100	50	—
5.	Shalayatantra	50	25	—
6.	Shalakyatantra	50	25	—
Fifth Year				
1.	Kayachikitsa	200	100	—
2.	Shalakya tantra	100	75	—
3.	Shalya tantra	100	75	—
4.	Charaka Samhita	100	—	—

The period of theory and practical shall not be of less than 45 minutes duration. The duration of the practical of Clinical subjects and Rachana Sharira (Dissection) shall be of atleast one and half (1½) hours.

NOTE:– The Clinical training in hospital to the students in the 3rd, 4th and 5th year shall be as below:–

(a) Kayachikitsa indoor and outdoor wards	10 months
(b) Shalya tantra indoor and outdoor wards	8 months
(c) Shalakyatantra indoor and outdoor wards	3 months
(d) Prasuti tantra indoor and outdoor words	3 months
(e) Kaumarabhritya	1 months
(f) Panchakarma	1 month
(g) Mansik rogas	1 month
(h) Sankramaka rogas (Including kshaya & Kushta rogas)	1 month

13. *Qualifications prescribed for Teaching Staff* :

Essential :

(a) Degree/diploma in Ayurved from a University established by law or a statutory Board/Faculty/ Examining Body of Indian Medicine or equivalent.

OR

Ayurvedacharya of All India Ayurved Vidyapeeth.

OR

Other eminent Ayurvedic scholars of established repute though not having any degree/diploma, but fit for teaching Ayurvedic subjects.

(b) Teaching experience in any institution for ten years, five years and three years for the post of Professor, Reader and Lecturer respectively.

(c) *Knowledge of Sanskrit*

Desirable :

(a) Post-graduate qualification in Ayurved from a recognised institution/university established by law.

(b) Original published papers/books on the subject.

SCHEDULE II

(*See* regulation 6)

MINIMUM STANDARDS FOR SIDDHA MARUTHUVA ARIGNER COURSE

Aims and Objects of Siddha Education

1. Aims and Objects of Education in Siddha Scheme as recommended by the Committee for Siddha relating to minimum standard of education to make available rational and efficient practitioners who will render medical relief on the basis of the principles and therapy and the system. The practioners should also be in a position to render emergency treatment.

2. To provide competent and suitable personnel who would undertake teaching and research work in the College of Siddha Medicine.

3. To produce basic doctors with a good knowledge of Noi Illa Nari and Ethirathukathal, so as to enable them to serve in Medical and Health Services.

I. *ADMISSION QUALIFICATION*

(i) The S.S.L.C. passed candidates should pass Part III advance Tamil of P.U.C. in the enterance Examination for

: BSMS Course of B.A. or B.Sc. students having passed mil Completely or a certificate of pass in Advance Tamil ly under Part III of the Pre-University.

(ii) *AGE*

To have completed the age of 15 years and six months on e 15th day of July of the year of admission to the course.

(iii) *DURATION OF THE COURSE*

The course shall be of 5½ years duration including six onths internship.

(a) First B. S. M. S. course	1 year
(b) Second B. S. M. S. Course	1 years
(c) Third B. S. M. S. Course	1½ years
(d) Final B.S.M.S.	1½ years
(e) Intership	6 months

DEGREE AFTER INTERNSHIP

(iv) *NAME OF THE DEGREE*

The graduate course will lead to the Siddha Maruthuva Arigner, Bachelor of Siddha Medicine and Surgery (B.S.M.S.) which shall be conferred on the candidate after he or she has successfully passed the qualifying examination and produced a certificate of Internship of 6 months in a recognised Hospital in Indigenous Systems of Medicine.

(v) *BODY TO REGULATE THE COURSE*

Central Council of Indian Medicine established under Act of 1970 will accord recognition and regulate the undergraduate and Post-graduate courses with a view to maintain uniform standards.

(vi) *EXAMINING BODY*

The recognised University to which the College of Indian Systems of Medicine is affiliated shall be the Examining Body.

(vi) (a) *MEDIUM OF INSTRUCTION*

Tamil shall be the medium of instruction for the course.

(vii) *EXAMINATIONS*

The graduate courses shall have the examinations as follows :—

(a) First B.S.M.S. Examination : at the end of three academic terms or one year after admission.

(b) Second B.S.M.S. Examination : at the end of three academic terms or one year after the First B.S.M.S. Examinations.

(c) Third B.S.M.S. Examination : at the end of Five academic terms or one and half year after the 2nd B.S.M.S. Examination.

(d) Fourth B.S.M.S. examination : at the end of 4 Academic terms or one and half years after the 3rd B.S.M.S. Examination.

(e) There shall be three examination in a year i.e. in October, December and April.

COURSE OF STUDY—FIRST B.S.M.S.

A candidate before presenting himself for the first B.S.M.S. Examination shall produce certificates of having attended the recognised course of instruction in the following subjects.

(i) A course of Lectures in Thotra Kiraman and Maruthuva varalaru extending over a period of three terms (about 216 hours).

(ii) A course of Lectures, Demonstrations, practicals in Maruthuva Thavara Iyal extending over a period of three terms (about 252 hours).

(iii) A course of Lectures and Demonstrations in Vedhiyal extending over a period of three terms (about 144 hours).

(iv) A course of Lectures & Demonstration in Bourthingam extending over a period of three terms (about 144 hours).

(v) A course of Lectures, Demonstrations in Valangiyal extending over a period of three terms (about 108 hours).

(vi) A course of Lectures and Demonstrations in Udal-L-Koorugal extending over a period of six terms—spread over first and second years of study (first course about 144 hours) which shall also include the dissection of whole human body.

(vii) A course of Lectures on Udai-Thaththuvam extending a period of Six terms—spread over First and Second years of Study (First Course about 7 hours) which shall also include selected practical classes.

(viii) A course Lectures and practicals on Gunapadam Mooligai extending over a period of Six terms—Spread over First and Second years of Study (First Course about 144 hours).

(ix) A course of Lectures and practicals on Gunapadam-Thathu Jangamam extending over six terms—Spread over a period of First and Second years of study (First Course about 72 hours).

Scheme of Examinations : for First B.S.M.S. shall consist of three parts which may be taken at the end of three terms of study.

PART—I

	Hours	Marks
Thotra Kiramam Arachi & Maruthuva Varalaru :		
Written	3	10
Oral	—	

PART-II

1. Maruthuva Thavara Iyal Written	3	100
Practical	3	100
Oral	—	50
2. Vilangu Iyal	3	100
Written	3	100
Oral	—	50

PART-III

1. Vedhiyal	3	1005
Written	—	
Oral		
2. Bothikam :	3	100
Written	—	50
Oral		

Submission of Laboratory Note Book : A candidate shall bring to the practical examination on the subjects included under part II (i) for the inspection of the Examiners their original practical record note books, practical sheets, certified by their Lecturer as being the actual working note made by the Candidate in the practical class.

Candidates may be permitted the use of their practical note books or sheets at the practical examinations. At the practical and oral Examinations reference may be made by the examiners to the candidates class records.

ELIGIBILITY FOR ADMISSION :

Period of study. No candidate shall be admitted to any part of the Examination unless :

1. He has produced satisfactory evidence of having complied with the provisions regarding age limit for admission and,

2. He has produced the prescribed certificates of study.

CERTIFICATE OF ATTENDANCE: Candidates must put in a minimum of 80% of attendance in all the subjects.

MARKS QUALIFYING FOR A PASS: A candidate shall be declared to have passed First B.S.M.S. Examinations if he obtains not less than one half of the marks in the written and oral Examinations taken together in each of the subjects of Part I, II, III and not less than one half of the marks in the practical examination in Part II (i) Maruthuva Thavara Iyal.

All the other candidates shall be deemed to have failed in the Examinations.

EXEMPTION FROM RE-EXAMINATION IN SUBJECTS:

Candidates who fail in the Examinations but obtain pass marks in any subject shall be exempted from re-examination in that subject.

FURTHER STUDY FOR FAILED CANDIDATES: Candidates who fail in any subject shall be required to produce a certificate of further study for a period which shall extend upto the next succeding examination.

SECOND B.S.M.S. EXAMINATION:

A candidate before presenting himself for the Second B.S.M.S. Examinations shall produce a certificate of having passed the First B.S.M.S. Examination and subsequently attended the recognised course of instructions in the following subjects :—

I. A course of Lectures and Demonstrations in Udal Koorugal extending over a period of three terms about (432 hours) and also include the dissection of the whole Human Body (Second Course).

II. A course of Lecture on Udal-Thathuvan extending over three terms (about 216 hours) which shall also include selected practical classes.

III. A course of Lectures and conducted practicals in Gunapadam (Mooligai) extending over a period of three terms about (432 hours Second Course).

IV. A course of Lectures and Conducted practicals in Gunapdam (Thathu Jangamam) extending over a period of three terms (above 216 hours Second Course).

SCHEME OF EXAMINATIONS: Second B.S.M.S. Examination shall consist of two parts.

PART—I

(i) Udal Koorugal :		
Written	3	100
Oral	—	50
Practical	3	100
(ii) Udal Thathuvam :		
Written	73	100
Oral	—	50

PART—II

(i) Gunapadam Mooligai :		
Written	3	100
Oral	—	50
Practical	3	100
(ii) Gunapadam (Thathu Jangamam)		
Written	3	100
Oral	—	50
Practical	3	100

NOTE: A course of instruction on Gunapadam (Mooligai and Thathu Jangamam) shall include demonstrations and preparations of various kinds of recipies and attendance in the pharmacy for a period on one term.

SUBMISSION OF LABORATORY NOTE BOOK: The candidate shall bring to the practical examination on the subjects included under Part II for inspection of the Examiners their original practical record note books and practical sheets certified by the Lecturers as being the actual working notes made by the candidates in the practical class.

Candidates may be permitted the use of practicals note books or sheets at the practical Examination. At the practical and Oral Examination reference may be made by the examiners to the candidates class records.

EXAMINATIONS MAY BE TAKEN IN PARTS OR IN WHOLE CONDITIONS:

Candidates may present themselves for the whole Examination at one time or may take them in two parts provided that the examinations are taken after six terms of study is completed subject to passing the first B.S.M.S. Examination.

A candidate for the Second B.S.M.S. Examination shall be declared to have passed Part I of the Examination, if he obtains not less than one half of the marks in the written and oral examinations taken together in each of the subjects.

A candidate shall be declared to have passed Part II of the examinations if he obtains not less than one half of the marks in the written and oral examinations taken together in each of the subjects, and not less than one half of the marks in the practical examination in these subjects.

All other candidates shall be deemed to have failed in the Examination.

EXEMPTION FROM RE-EXAMINATION IN THE SUBJECT:

Candidates who fail in the examination but obtain pass marks in subject shall be exempted from re-examination in that subject.

FURTHER STUDY FOR FAILED CANDIDATES: Candidates who failed in any subject or subjects shall be required to produce a certificate or further study for the period which shall extend to the next succeeding examination.

THIRD B.S.M.S. EXAMINATION:

A candidate before presenting himself for the Third B.S.M.S. Examination :—

(a) Shall produce certificate of having passed the Second BSMS Examination.

(b) Has been engaged in the study of the following subjects :—

1. A course of Lectures and Demonstration in Noi-Anguga Vithi Ozhukkam. Noyai-Ethirathu Kathal : and Pothu Nal Vazvu :- Extending over a period of five terms (about '80 hours).

2. A course of lectures and demonstrations in Noi Nadal, Noi mudal Nadal (including envagaitherthal) extending over a period of five terms (about 360 hours) which shall include demonstrations of Munkirumigal and Varithaigal etc.

3. A course of Lectures and Demonstrations in Nanju Nool and Maruthuva Needhi Nool extending over a period of five terms (about 180 hours) which shall include demonstrations of Pina Parisothanai.

4. Attended the First course Lectures and Clinical Training in Siddha Maruthuvan extending over a period of five terms (about 300 hours) which shall include Noigaligyin parisothanai.

5. Attended the First course of Lectures and Clinical training in Siddha Aruvai Maruthuvam extending over a period of five terms (about 240 hours) which shall also include Muthal Udavi and Patii Kattudhal.

6. Attended the First course of Lectures and clincial training in Sool Maruthuvam and Karpini Tharkappu extending over a period of five terms (about 180 hours) which shall also include the study of Karu Urpathi.

Items (iv) (v) & (vi) are not for Third B.S.M.S.

ne of Examination : The third BSMS examination shall ist of two parts.

	Hours	Marks
PART-I		
Noi Angua-Vithi-Ozhukkam etc. :		
Written	3	100
Oral	—	50
Noi Nadal, No. 1 Mudal Nadal etc. :		
Written	3	100
Oral	—	50
PART-II		
. Nanju Nool-Maruthuva Neethi Nool :		
Written	3	100
Oral	—	50

MARKS QUALIFYING FOR A PASS : A candidate all be declared to have passed Part I & II of the Third S.M.S. Examination if he obtains, (i) Not less than one lf of the marks in the written and oral examinations taken gether in each subject of Part I & II (ii). All other ndidates shall be deemed to have failed in the Examinaons.

EXEMPTION FROM RE EXAMINATION IN SUBJECT : andidates who fail in the examination but obtain pass iarks in any subject shall be exempted from re-examination i that subject.

FURTHER STUDY FOR FAILED CANDIDATES : andidates who fail in Part I and part II of the Third B.S.M.S. Examniation in any subject there of shall be required to put n an additional course of attendance for a period of which hall extend upto the next succeeding examination.

FOURTH OR FINAL B.S.M.S. EXAMINATION : A andidate before presenting himself for the Final B.S.M.S. Examination :—(a) Shall produce certificates of having passed First, Second & Third B.S.M.S. Examination.

(b) has been enaged in the study of the subject for three academic years extending for a period of 9 terms for each of the subject of (i) Siddha Maruthuvam (Pothu) (ii) Siddha Maruthuvam (Siddha) (iii) Siddha Aruvai Maruthuvam and Siddha Sool Maruthuvam etc. and produce relevant certificates there of.

COURSE OF EXAMINATION : The Course of Lectures and Clinical training for the final B.S.M.S. subject for examination will be :

(a) Maruthuvam (Pothu) for 3 academic years—about 732 hours (9 terms)

(b) Maruthuvam (Sirappu) for 1½ academic years—about 144 hours. (9 terms)

(c) Aruvai Maruthuvam for 3 academic years—about 528 hours (9 terms)

(d) Sool Maruthuvam including Magalir Pillai pini Maruthuvam etc. for 3 academic years—about 468 hours. (9 terms)

Scheme of examination for Final B.S.M.S. Examination shall be as follows :—

1. Maruthuvam (Pothu)		
Written	3 hours	100 marks
Clinical examination consisting of		
(i) one lo ng case for one hour &		
(ii) three short cases for half an hour		10 marks
Oral		50 Marks
2. Maruthuvam (Sirappu)		
Written	3 hours	100 marks
A clinical examination of a long case only	1 hour	100 marks
Oral	—	50 marks
PART-II		
1. Aruvai Maruthuvam :		
Written	3 hours	100 marks
Aclinical examination of one long case (one hour and three short cases) for half an hour		100 marks
Oral	—	50 marks
2. Sool Maruthuvam etc. :		
Written	3 hours	100 marks
Clinical examination of a long case for one hour and three short cases for half an hour	—	100 marks
Oral	—	50 marks

MARKS QUALIFYING FOR A PASS : A candidate shall be declared to have passed Part I & II of the Final B.S.M.S. Examination if he obtains (a) not less than one half of the marks in the written and oral examinations taken together in each subject of Part I and II and (b) not less than one half of the marks in clinical examination in each subject under Part I and II.

All the other candidates shall be deemed to have failed in the examination.

EXEMPTION FROM RE-EXAMINATION IN SUBJECT :

Candidates who fail in the examination but obtained pass marks in any subject shall be exempted from a re-examination in that subject.

FURTHER STUDY FOR THE FAILED CANDIDATES :

Candidates who fail in Part I and II of the Final B.S.M.S. Examination in any subject thereof shall be required to put in an addiiton course of attendance for a period which shall extend upto the next succeeding examination.

Candidates who have passed the final examination of B.S.M.S. shall prior to their admission to the Degree put in the internship under a recognised Medical Officer in a recognised hospital of Indian Medicine.

Such candidates shall before the award of the Degree produce a certificate of statisfactory completion of the student Internship.

SCHEDULE III

(See Regulation 7)

MINIMUM STANDARDS FOR KAMIL-E-TIB-O-JARAHAT COURSE

1. *Aims and objects of Unani Education* :

To produce competent Unani physicians who can handle all sorts of cases medical as well as surgical based on their extensive knowledge about the fundamental theories and the basic principles of the Unani systems of Medicine with modern advances where necessary. Such Unani Graduates shall be competent to serve in the meedical and health services of the Country.

2. *Admission qualification*

Senior Secondary (12th std.)/Intermediate or equivalent oriental qualification. They will be eligible for admission to main five years course of B.U.M.S.

Or

S.S.L.C./Matriculation or equivalent oriental qualification to two years Pre-Tib Course.

NOTE : Preference shall be given to those who are proficient in Arabic or Persian.

The Pre-Tib Course of one year duration may also continue in the case of those state where 10-2 pattern of education has not yet been implemented.

3. *Minimum age for admission* :

(a) 15 years as on 1st October in the year of admission for first year of Pre-Tib Course.

(b) 16 years as on 1st October in the year of admission for Second year of Pre-Tib Course.

(c) 17 years as on 1st October in the year of admission for Main Unani Course.

4. *Duration of Course*

Pre-Tib Course . . .	One year/two years
Main Course	Five years.
Internship	Six months

5. *Degree to be awarded after successful completion of Course* Kamil-e-tib-o-Jarahat (Bachelor of Unani Medicine & Surgery)

6. *Medium of instruction*

Medium of instruction shall be Urdu substantiated with English wherever necessary. "Where Urdu knowing students are not available, facilities for teaching (including text-books) in Hindi or regional language may be provided and a change in the medium may be adopted.

Necessary modern advancements shall be incorporated in the course of studies. In such cases terminology shall be standard modern terminology with Arabic equivalent. For Unani, the terminology shall essentially remain the Unani terminology.

7. *Number of lectures in Pre-tib. Course*

Subject	Total number of lectures			
	Two years course		One year course	
	Theory	Practical	Theory	Practical
Tabiyat . .	300	80	200	50
Kimiya . .	300	80	200	50
Nabatiyat . .	200	50	125	30
Havaniyat . .	200	50	125	30
Arabic . . .	250	—	125	—
Mantiq-o-Falsafa	100	—	50	—
English . .	250	—	125	—
Total .	1600	260	950	160

Duration of lectures

The minimum duration for theory should be forty-five minutes and one hour for practicals.

Exemption for appearing in certain subjects

The students with oriental qualification should be exempted for appearing in subjects of Arabci and Mantiq-o-falsafa Likewise, Matriculates and Higher Secondary passed students with English as one of their subjects should be exempted from appearing in the subject of English.

8. *Subjects of Examination in Main Course*

PRE CLINICAL

1st Year

1. TASHREEH
2. MANAFE-UL-AZA
3. UMOOR-E-TABEEYA
4. ILMUL ADWIA (KULIYAT-E-ADWIYA)

Examinations 3 and 4 theory

2nd Year

1. TASHREEH
2. MANAFE-UL-AZA
3. ILMUL-ADWIA (Mufradat)
4. Hifzane-SEHAT-O-Tahafeeuzi-O-Samaji Tib

CLINICAL

3rd Year

1. TIBB-E-QANOONI-O-ILMUL SUMOOM
2. ILMUL AMRAZ-O-ILMUL JARASEEM
3. MOALEEJAT
4. ILMUL-ADWIA (Murakkabat-o-Saidla)
5. SAREERIYAT (USOOL-E-TASHKEES-O-TAJAVEEZ)

Examinations 1, 2, 4 & 5—theory and practical

4th Year

1. MOALEJAT JUL II
2. QABALAT-O-MUTALEEQA AMRAZ
3. AMRAZ-E-NISWAN-O-ATFAL
4. TARIKH-E-TIB
5. MATAB

Examinations 2 and 3 theory and practical 1 and 4 theory.

5th Year

1. MOALEJAT JUZ III
2. AMRAZ-E-AIN, UZN, ANAF, HALAQ-O-ASNAN
3. JARRAHIYAT
4. MATAB

Examinations 2 and 3 theory and practical 1 and 4 practical.

SCHEME OF TEACHING

THE FOLLOWING SHALL BE ALLOCATION OF LECTURES FOR EACH YEAR AND SUBJECTS OF UNANI COURSE

1st Professional course

S., No.	Subjects	Theory	Practical	Total
1	2	3	4	5
1.	Tashreeh-ul-Badan . .	100	75	175
2.	Munafe-ul-Aza . .	120	30	150
3.	Umoor-e-Tabiya . .	150	—	150
4.	Ilmul Adwia (Kulliyat-e-Adwia .	150	—	150
				625

2nd Professional Course :

1	2	3	4	5
1.	Tashreeh-ul-Badan .	100	75	175
2.	Munafe-ul-Aza . .	120	30	150
3.	Ilmul-Adwia (Mufradat)	125	75	200
4.	Hifzan-e-Sehat, Tahafuz-o-Samaji Tib. (Hygiene. Preventive & Social medicine)	125	25	150

rd Professional Course :

1.	2	3	4	5
1.	Ilmul-Adwia (Murakkabat -o-Saidia)	100	100	200
2	Sarceriyat (Usool-e-Tash-khees-o-Elaj)	100	100	200
3.	Ilmul Amraz (Ahwal, Asbab, Alamat-o-Ilmul-Jarseem)	150	50	200
4.	Tibb-e-Qanooni-o-Ilmul Sumoom	125	25	150
5.	Moalejat Part I	150	—	150
				900

4th Professional course :

1	2	3	4	5
1.	Ilmul-Quabalat-o-Mutaleqa-Amraz	100	*	100
2.	Moalejat Part-II	100	*	100
3.	Amraz-e-Niswan-o-Atfal	150	*	150
4.	Matab	150	*	150
5.	Tareekh-e-Tib	50	*	50
				550

5th (Final) Professional course :

1	2	3	4	5
1.	Jarrahiyat	100	*	100
2.	Moalejat Part-III	150	*	150
3.	Matab	150	*	150
4.	Amraz-e-Ain, Anaf, Uzan Halaq etc.	100	*	100
				500

Practical training in all those subjects will be in the out-door and indoor Departments for a period not less than one month.

9. *Scheme of Examination*

There shall be six examinations called the pre-Tib. 1st, 2nd, 3rd, 4th & 5th Professional examinations respectively. Each of these six examinations shall be held twice a year ordinarily in the month of April/May and October/November.

Examinations prescribed for the professional courses may be conducted, as deemed necessary, by means of written papers, practical, clinical and oral tests, or by means of any combination of these methods.

SCHEME OF EXAMINATION

PRE-TIB COURSE

Subjects	Theory — No. of Papers	Duration for each paper	Marks per paper	Practical — Record Book	Practical — Practical	Viva Voce	Total	Total Marks — Theory	Total Marks — Practical & Viva Voce	Grand Total of Marks
2	3	4	5	6	7	8	9	10		11
1. Kimiya (Chemistry)	1	3 Hours	100	1 Record Book	50	150	100	50		150
2. Tabeeyat (Physics)	1	3 Hours	100	Do.	50	150	100	50		150
3. Haiwaniyat (Zoology)	1	3 Hours	100	Do.	50	150	100	50		150
4. Nabtiyat (Botany)	1	3 Hours	100	Do.	50	150	100	50		150
5. Arabic	1	3 Hours	100	—	—	—	100	—		100
6. Mantiq-o-Falsafa-o-Ilumulnoh.	1	3 Hours	50	—	—	—	—	—		50
7. English	1	3 Hours	150	—	—	—	—	—		150
							Total			900
				1st Professional						
1. Umoor-e-Tabiya	1	3 Hours.	100	—	50	50	100	50		150
2. Ilmul Adwia	1	3 Hours	100	—	50	50	100	50		150
					Total					300

N.B.—Out of the (50) marks alloted for practical (10) marks shall be for Record Book.

SCHEME OF EXAMINATION
SECOND PROFESSIONAL

Subjects	No. of papers	Theory		Practical		Vice Voce	Total	Total Marks		Grand Total of Marks
		Duration for each paper	Marks per Paper	Record Book	Practical			Theory	Practical & Viva	
1. Munafe-ul-Aza	1	3 hours	100	Record Book 20	50	30	100	100	100	200
2. Tashreeh-ul-Badan	1	3 hours	100	Record Book 20	50	30	100	100	100	200
3. Ilmul Adwia (Mufradat)	1	3 hours	100	Record Book 20	—	30	50	100	50	150
4. Hifze Sehat	1	3 hours	100		—	50	50	100	50	150
								Total		750

THIRD PROFESSIONAL

1. Ilmul Adwia (Murakkabat-o-Saidla)	1	3 hours	100	Record Book 20	50	30	100	100	100	200
2. Sareeriyat (Usool-e-Tashkhees-o-Ilaj)	1	3 Hours	100	—	50	—	50	100	50	150
3. Ilmul-Amraz	1	3 hours	100	—	30	20	50	100	50	150
4. Tib-e-Qanooni-o-Ilmul-Sumoom	1	3 hours	100	—		50	50	100	50	150
Total										650

SCHEME OF EXAMINATION

FOURTH PROFESSIONAL

Subjects	No. of Papers	Theory		Practical		Viva Voce	Total	Total Marks		Grand Total of Marks
		Duration for each paper	Marks per paper	Record Book	Practical			Theory	Practical & Viva	
1. Ilm-ul-Qabalat-o-Mutalieqa-Amraz	1	3 hours	100	—	—	50	50	100	50	150
2. Tareekh-e-Tib	1	3 hours	100	—	—	—	—	100	—	100
3. Amraz-e-Niswan-o-Atfal	1	3 hours	100	—	50	50	100	100	50 + 50	200
										450

FIFTH (FINAL PROFESSIONAL)

1. Jarrahiyat	1	3 hours	100	—	50	50	100	100	100	200
2. Moalejat	2	3 hours each	100	—	—	—	100	200	100	300
3. Amraz-e-Ain Anaf, Halaq, Uzn etc.	1	3 hours	—	—	50	—	50	100	50	150
4. Matab	1	—	—	—	80 20	—	100	—	—	100
Total										750

15. *QUALIFICATION PRESCRIBED FOR TEACHING STAFF* :

Qualification of teachers

a. *For Medical subjects*

I. *ESSENTIAL*

(i) Degree/Diploma in Unani Medicine from a University established by law or a statutory board/faculty examining body of Indian Medicine or equivalent.

(ii) Teaching experience in a recognised institution for ten years, five years, and three years for the post of Professor, Reader and Lecturer respectively.

II. *DESIRABLE*

(i) Post-graduate qualification in Unani from a recognised institution/University established by law.

(ii) Original published papers/books on the subject.

b. *For subjects of Basic Sciences*

M.Sc. first or second class in respective subjects.

c. *For Arabic subjects and Mantiq-o-falsafa*

Fazil in Arabic with Mantiq-o-falsafa or equivalent.

d. *For English*

M.A. first or second class in English.

R. K. JAIN
Registrar
Central Council of Indian Medicine

MGIPF—1 CC of IM/86—23-6-86—1,000.